|  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| प्रभो – ईश्वर की भक्ती  जयशंकर प्रसाद-1889  कानन कुसुम कविता संग्रह  जयशंकर प्रसाद प्रमुख कृतियाँ :-  झरना,आँसू,लहर,कामायनी,आकाश्दीप, आँधी,चंद्रगुप्त,,ध्रुवस्वामिनी, कंकाल, तितली और ईरावति।  विमल इंदु की विशाल किरणे  प्राकाश तेरा बता रही है  अनादि तेरी अनंत माया  जगत को लीला दिखा रही है  प्रसार तेरी दया का कितना  देखना हो तो देखे सागर  तेरी प्रशंसा का राग प्यारे  तरंगमलाएँ गा रही है  जो तेरी होवे दया दयानिधि  तो पूर्ण होते सब के मनोरथ  सभी ये कहते पुकार करके  यही तो आशा दिला रही है | **इंटर्नेट क्रांती-**  ई गवर्नेन्स – पारदर्शी प्रशासन वर्चुवल मिटिंग रूम – काल्पनिक सभाग्रह  आज का युग इंटर्नेट का युग है। अनगिनत कंप्युटरों को एक साथ जुडनेवाला अंतर्जाल है ।  ब्यांकिंग और व्यापार क्षेत्र में बहुत सहाय होता है, क्यों कि घर बैटे खरीदारी कर सकते है, चाहे जितनी भी रकन दुनिया के किसी भी कोने बेजी ज सकती है हानि : पैरसी,ब्याकिंग फ्राड,हैकिंग | | भक्तों के भगवान –  करॊडपति – शिवजी का मंदीर बनवाया था रोज जा कर पूजा करता था।भक्त करॊडपति  भिकारी – करोडपति का जान बचाया।बालक पर दया दिखाया। क्यों कि बालक के बाप अंधा था माँ बिमार थी । करोडपति से भी से बालक श्रेष्ट है क्यॊ कि बालक की सहायता की।  नौकर ने आकर कहा कि मालिक बाजार में बहुत बढा घाटा हुआ है कीमते गिर गए है। | | |
| रविंद्रनाथ टैगोर – 7 मई 1861  भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि  पिता-महर्षी देवेंद्रनाथ(ब्रह्म समाज के बढे नेता  शांतिनिकेतन का आशय – औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ युवक-युवतियों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन के लिए एक अवश्यक मंच का निर्माण हो।  गितांजलि- नोबल पुरस्कार – 1913  सन 1919 में जलियाँवालाबाग अमानुषिक हत्याकांड के कारण रविंद्रनाथ टैगोरजी ने सर की उपादि त्याग दी | | मात्रूभूमि – देशभक्ती  भगवतिचरण वर्मा 30अगस्त1903  मातृभूमि के अंदर गांधी,बुद्ध और राम श्यित है।  मातृभूमि खेत हरे-भरे है,यहाँ के वन-उपवन फल-फूलों से भरे है। मातृभूमि के अंदर खनिजों का व्यापक धन भरा हुआ है और माँ सुख-संपती, धन-धाम को अपने मुक्त हस्त से बाँट रही है।  **मातृभूमि का स्वरूप:** एक हाथ में न्याय पताका है और दूसरे हाथ न्याय पताका है। जाग का रूप बदलने के लिए कवि कह रहे है। आज कोटि-कोटि भारत माँ के साथ है। और सकल नगर और ग्राम जै हिंद नद से गूंज उठॆ है। | | |
| गिल्लू – महादेवी वर्मा 24 मर्च 1907 (आधुनिक मीरा)  गिल्लू दिवार और गमले से चिपक पडा था महादेवि उसे हौले से उठाकार रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सीलिन का मरहम लगाकर उसकी जान बचाई। कुछ गंटों के उपचार बाद उसके मुँ मे एक बूंद पानी टपकाया गया।लेखिका को चौंकाने के लिए गिल्लू कभी परदे के चुन्नट मे चुप जाता कभी फूलादान के फूलों में। गिल्लू दिनभर सुराई पर लेटकर लेखिका के क्रिया कलाप को देखता। लेखिका गिल्लू को लिफाफे में रखती थी। गिल्लू कि समाधि सोनजूही पेड के नीचे बनाई गई।  गिल्लू अपने अंतीम दिनों मे न कुछ खाया न बाहर गया उअसके पंजे टंड हो रहे थे। लेखिका ने हिटर जलाकर उष्णता देने लगी  परंतु प्रभात से पहले गिल्लू मर गया। | बसंत की सच्चाई – विष्णु प्रभाकर 1912  बसंत – ईमानदार लडका। छलनी दियासलाई,  बटन बेच रहा था । आहीर टिले मेम रहता था  छलनी का दाम दो आना था ।  प्रताप – बसंत का भाई  बासंत ने राजकिशोरजी से पैसा लेने से इनकार किया क्यों कि ऐसे ही पैसा लेना भीख समझता  पंडत राजकिशोर – मजदुरों कि नेता।  राजकिशोरजी के मानवीय व्यवहार - बसंत की हालात देखकर उसकी सहायता करता है। पैसे बुना लाने गये बसंत मोटर के नीचे आ जाता है। उसकी पैर की हड्डी टूट जाती है। राजकिशॊर उसके सहायता करता अस्प्ताल में उसके ईलाज करवाता है।  राजकिशोरजी किशनगंज मे रहते थॆ।  राजकिशोर के बेटे का नाम अमरसिंह | | कर्नाटक संपदा :-संकलित  प्रगतिशील राज्य है, आबादी करीब छ करोड है।  प्रकृति सौंदर्य:- पश्चीम अरबी अस्मुद्र, दक्षीण से उत्तर की ओर फैली लंबी पर्वतमाला है(सह्याद्री)  कर्नाटकमें भारतीय विज्ञान संस्थान,एच.ए.एल,  एच.एम.टी,आई.टी.आई,बी.ई.एल. जैसी बृहत संस्थाएँ है।(सिलिकान सिटि)  वैज्ञानिक : सी.वी.रामन,सर.एम.विश्वेश्वरय्या  सी.एन.आर.राव-2013 भारतरत्न  कर्नाटक में सोना,ताँबा,लोहा आदि धातुएँ है।  भद्रावति में कागज, लोहे और इस्पात करखाने है।  कर्नाटक को चंदन के आगर कहते है।  नदियाँ- कावेरी कृष्णा तुंगभद्रा  जलप्रपात- जोग अब्बी शिवनसमुद्र गोकाक  ज्ञानपीठ पुरस्कृत साहित्यकार – कुवेंपु,शिवराम कारंत,मस्ति वेंकटेश अय्यंगार,वि.कृ.गोकाक, यू. आर.अनंतमूर्ती,गिरिश कार्नाड, चंद्रशेखर कंबार  राजवंश: गंग,कदंब,होय्सल,राष्ट्र्कूट,ओडेयर चालूक्य। | | |
| आत्मकथा –भीष्म सहानी-8अगस्त1915  बिस्तर से निकलते हि ताँगे के पीछे भागते पयदानपर चढकर एक सढक से दूसरी सढक एक गलि से दूसरी गली घूमते थे । घर लौटकर माँ से डाँट खाते थॆ।घूमने पर बंदीश लगता था।  रेस्ताराँ का मालीक चीनी व्यक्ति था । मालीक ने नो टी कहा तो लेखक को गुस्सा आया।  कालेज के साथ-साथ भीष्म साहनी जि कपडों का व्यापार करते थे।  भीष्म साहनीजी को अपने अंग्रेजी के अध्यापक से साहित्य रचना के लिए प्रेरणा मिली उसी ने भीष्म सहानीजी को उस दकियानूसी,संकीर्ण, घुटन भरे वातावरण से खींच कर बाहर निकाला । कालेज में पढाना, व्यापार करना,कांग्रेस्स का काम तीन काम करते थे | | | शनि सबसे सुंदर ग्रह :-  शनि सूर्य का पुत्र है,शनैश्चर का अर्थ है धीमी गति से चलनेवाला।  सौरमंडल मे शनि का दूसरा स्थान  शनि का उपग्रह टाईटन है।  शनिग्रह निर्माण हाईड्रोजन, हीलियम, मीथेन तथा एमिनिया गैसो से हुआ है ।  सौरमंडल का सबसे बडा ग्रह बृहस्पति है | | |
| ईमान दारों के सम्मेलन में – व्यंगरचना हरिशंकर पारसाई 22 अगस्त 1924  लेखक को प्रसिद्ध ईमानदार मानकर उन्हे सम्मेलन के उदघाटन के लिए बुलाया।  लेखक ने यह हिसाब लगाकर गया की प्दूसरे दर्जे में जाकर पहले दर्जे का किराया लेंगे तो पैसे बच जायॆंगे  स्टेशन लेखक का खूब स्वागत हुआ। दस बडी मालाएँ पहनायी गयी।लेखक उन्हॆ बेचने का सोचा  सम्मेलन उदघाटन शानदार हुआ।  उअदघाटन के बाद लेखक के चप्पले चोरी होगयी  उनके चप्पल के जगह फटि पुरानि चप्पले थी। लेखक के चप्पल जिस आदमी ने चुराया था वही आदमि लेखक को सलाह दे रहा था की एक चप्पल ईधर छोडा दूसरा दास पीट दूर ।  कमरे मे जाकार देखा तो बिस्तर के चादर गायब।  दूसरे दिन देखा तो दो और चादरें गायब  दूसरे दिन धूप का चश्मा मेज पर रखा था गायब है।  इसी समय बगल कमरें का सूटकेस चॊरी हो गई  एक आदमी ने लेखक से आकर कहा की बडे चोरिया हो रहि है आज कल, लेकिन लेखक ने देखा की उसी आदमी ने लेखक का धूप का चश्मा पहना था ।  तीसरे दिन रात को बिस्तर से कम्बल गायब है।  लेखक कपदे सिरहाने कि नीचे और चप्पले बिस्तर के नीचे छुपाकर सोया।  लेकक कमरा छोढने का निर्णय: चप्पल,चादर,धूप का चश्मा यहाँ तक ताला भी चोरी हुआ अब रूकेंगे तो ओ ही चोरॊ हो जयेंगे | | अभिनव मनुष्य :-  रामाधारी सिह दिनकर १९०४  आज की दुनिया विचित्र है  आज मनुष्य प्रकृति पर विजयी है।  मनुष्य के करॊं में वारी विद्युत बाप बंधा हुआ है।  मनुष्य हुकम पर पवन का ताप उतरता चढता है। मनूज का यान गगन में जा रहा है।मनुष्य के करों को देखकर परमानु काँपते है।  मानव का सही पहचान: मानव के बीच स्नेह का बाँध बाँधना मानव की सिद्धी है, जो मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोडकर आपसी दूरी को मिटाए, वही मानव कहलाता है। | | वृक्ष प्रेमी तिम्मक्का:  तुमकूर गुब्बी कक्केनहल्ली  पिता:चिक्करंगय्या माता ; विजयम्मा पती : बिक्कलचिक्कय्या  तिम्मक्का के माँ-बाप मेहनत मजदूरी करके अपने पेट पलते थे।  २००५ में बल्लूर के उमेश बी.एन. को दत्तक पुत्र के रूप मे लिया।  तिम्मक्का दंपती ने तय किया की स्वयं को किसी डर्म कार्य मे लग ले,उनके गाँव के पास श्रीरंगस्वामं का मन्दीर मे जानवारों को पीने की पानि का व्यवस्था की।  तिम्मक्का हुलिकल से कुदूर के बीच ४ किमी के रास्ते के दोनो ओर बरगद के पेड लागाये। पेडों को भेड,बकरियों से बचाने के व्यवस्था की।पहले साल पंद्रह,दूसरे साल सौ,तीसरे साल नब्बे, पेड रहगिरों को छाया,पक्षी का आश्रय।  मुसिबत की घडि: तिम्मक्का की पति की तबियत खराब हुई,जो पेड उनकी देख-रेख मे पले थे उन्ही के निचे भीख माँगना पडा।  पर्यावरण संरक्षण के साथ अन्य सामाजिक कार्य भी की गरीबॊ के चिकित्सा देने के लिए अस्पताल निर्माणा का संकल्प लिया ये अनुकरणिय है। पुरस्कार की धनराशी दीन-दलीत को | |
| तुलसी के दोहे:  तुलसीदास १५३२  रामभक्ति शाखा - रामचरीतमानस  मुखिया मुख सोंचाहिए,खान पान को एक  पालै पोसै सकल अंग,तुलसी सहित विवेक।  जड चेतन, गुणदोषमय विश्व किन्हकरतारी संतहंसगुण गहहिं पयपरिहारी वारीविकार दया धर्म का मूल है,पाप मूल अभिमान  तुलसी दया न छाँडिए जब लग घट मे प्राण  विपत्ती के साथी : विद्या,विनय,विवेक।  रामनाम मनि दीप धरू जीह देहरी द्वार  तुलसी भीतर बाहिरौ जो चाहसी उजियार | |
| सूरश्याम:  सूरदास – १५४० सूरसागर  कृष्ण अपने माता से शिकायत करता है।  अपनी भाई बलराम के खिलाप शिकायत करता है।  बलराम कृष्ण से कहता है की यशोदा तुम्हारी माँ नही है उसने तुजे मोल लिया है। इसी गुस्से के कारण कृष्ण उनके साथ खेलने नही जाता।  गोरे नंद-जशोदा गोरी। चुटकी देकर हसनेवाले ग्वाल।सुनो कृष्ण बलराम तो जन्म से ही चुगुलेकोर है मुझे गोदन की कसाम मै तुम्हारी माता हुँ और तुम ही मेरे पुत्र हो ऐसे कहकर यशोदा कृष्ण के क्रोद को शांत करती है। | | साहित्य सागर का मूर्ती  चंद्र शेखर कंबार –जन्म बेलगाँव जिला हुक्केरी तालूका घोडगेरि मे हुआ।  घोडगेरी गाँव घटप्रभा नदि के तट पर है।  घोडगेरी कुग्राम था ।  घोडगेरी के लोगों का जीवन खेती पर निर्भर था।  कंबार जी के लिए आदर्श उनके पिता।जो पुरूष मेहनत करता है वही सुंदर होता है।  राष्ट्रभाषा हिंदी के बारे मे कंबारजी कहते है कि- राष्ट्र मे एकता लाने के लिए हिंदी भाषा अत्यंत उपयॊगी है। आजकल संपर्क भाषा के रूप मे प्रचलित है।हमे आपसी व्यवहार के लिए अवश्यक। | | | सत्य की महिमा  सत्य बहुत भोला-भाला बहुत ही सीधा-सादा होता है। सत्य दृष्टि का प्रतिबिंब है ज्ञान का प्रतिलिपि है आत्मा की वाणि है।  महात्मा गाँधिजी के अनुसार सत्य एक विशाल वृक्ष है उसकी जितना आदर किया जाता है उतना ही फल मिलता है।  झूट बोलने से : व्यक्तित्व कुंटित होता है, लोगो का विश्वास उठ जाता है। |
| अनमोल समय  समय का सदुपयोग – सही समय मे सही काम करना ।उपयुक्त समय मे अपना कार्य को पूर्ण करना। समय नष्ट हो जाने पर जीवन ही नष्ट होता है खोया हुआ समय बार बार ब्नही मिलता है। हमे समय का आदर करना चाहिये। | | छुट्टि पत्र  प्रेषक/    सेवा में/  विषय:  ----------------------------------  ----------------------------------------------  ----------------------------------------------  स्थल :  दिनांक :  हस्ताक्षर | | | इंटर्नेट :  लाभ:  मनोरंजन होता है।  ज्ञानवृद्धी होता है।  अवश्यक जानकारी मिलता है।  समय का सदुपयोग हो जाता है।  हानी:  अनचाहे जिजो से परिचित होते  समय व्यर्थ होता है।  हैकिंग, ब्यांकिंग फ्राड, पैरसी।  आवश्यक जानकारी चुराय जाता |